ॐ श्री गंगाईनाथाय नमः

स्पिरिचुअल साइंस

Spiritual Science

अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर द्वारा प्रकाशित

वर्षः 13 अंकः 155 हिन्दी-अंग्रेजी मासिक ई-पत्रिका अप्रेल 2021

File Photo

'आप शरीर नहीं हो, आत्मा हो, आत्मा।'

–गुरुदेव सियाग

क्या एक निर्जीव चित्र सजीव पर प्रभाव डाल सकता है ?

प्रत्यक्ष को प्रमाण क्या ?

सद्गुरुदेव सियाग की दिव्य वाणी में संजीवनी मंत्र सुनकर इनके चित्र पर ध्यान करके देखें। (अपने घर बैठे ही)

मंत्र दीक्षा के लिये डायल करें – 07533006009

ईश्वर की सर्वोच्च अभिव्यक्ति- मानव

www.the-comforter.org

''मनुष्य योनि ईश्वर की सर्वोच्च अभिव्यक्ति है। सभी का मत है कि मानव का सृजन उसके सृजनहार की प्रतिमूर्ति के रूप में हुआ है। अतः मनुष्य अपना क्रमिक विकास करते हुए अपने सृजनहार के तद्रूप बन सकता है।''

-समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग

ॐ श्री गंगाईनाथाय नमः

स्पिरिचुअल साइंस

Spiritual Science

अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर द्वारा प्रकाशित

गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग

बाबा श्री गंगाईनाथ जी योगी (ब्रह्मलीन)

वर्ष: 13 अंक: 155 हिन्दी-अंग्रेजी मासिक ई-पत्रिका अप्रेल 2021

❖

संस्थापक एवं संरक्षक:

पूज्य सद्गुरुदेव
श्री रामलाल जी सियाग

❖

सम्पादक:

रामूराम चौधरी

कार्यालय:
स्पिरिचुअल साइंस पत्रिका

अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र
पो. बॉक्स नं. - 41,
होटल लेरिया के पास,
चौपासनी, जोधपुर (राज.) भारत

+91 291 2753699
+91 9784742595
E-mail:
spiritualscienceavsk@gmail.com

Head Office
Spiritual Science Magazine:
Adhyatma Vigyan Satsang Kendra
Post Box No. - 41
Near Hotel Lariya, Chopasani,
Jodhpur (Raj.) India - 342001

+91 291 2753699
+91 9784742595
E-mail:
spiritualscienceavsk@gmail.com
Website:
www.the-comforter.org

अनुक्रम

सम्पादकीय- 'आध्यात्मिक सद्गुरु' 4

कहानी - दृष्टिकोण 9

विश्व शांति के लिए सामूहिक शक्तिपात दीक्षा 14

साधना विषयक बातें 15

साधक की अनुभूति 20

मानस की नीरवता 21

सिद्ध-योगियों की महिमा 25

रूपान्तरण (Transformation) 28

ध्यान कार्यक्रमों का आयोजन 32

Youth is the Time to Gain Spiritual Knowledge 35

सद्गुरुदेव की दिव्य लेखनी से 41

योग के आधार 43

सिद्धयोग :- शक्तिपात दीक्षा द्वारा कुण्डलिनी जागरण 45

ध्यान की विधि 48

आध्यात्मिक सद्गुरु

मनुष्य ईश्वर का स्वरूप है। वह वापस ईश्वर कैसे बन सकता है, उनमें वापस कैसे मिल सकता है, ईश्वर और मनुष्य के बीच जो मिलाने का काम करता है; वह कौन है? वह है - सद्गुरु।

सद्गुरु मानव देह में साक्षात् भगवान् ही होते हैं। साधक के पूर्ण विकास में आध्यात्मिक गुरु की क्या भूमिका होती है, इस संबंध में स्वामी विवेकानन्द ने विस्तार से सद्गुरु और शिष्य के बारे में समझाया है।

''यह निश्चित है कि प्रत्येक आत्मा को पूर्णता की प्राप्ति होगी और अन्त में सभी प्राणी, उस पूर्णावस्था को प्राप्त करेंगे। हम इस समय जो भी हैं, वह हमारे पिछले अस्तित्व और विचारों का परिणाम है तथा हमारी भविष्य की अवस्था हमारे वर्तमान कार्यों और विचारों पर अवलम्बित रहेगी। किंतु इससे हमारे लिए दूसरों से सहायता प्राप्त करना वर्जित नहीं हो जाता। किसी बाह्य सहायता से आत्मशक्तियों का विकास अधिक तेजी से होने लगता है। अतः संसार के अधिकांश मनुष्यों के लिए बाह्य सहायता की प्रायः अनिवार्य रूप से आवश्यकता होती है।

हमारे विकास को स्फुरित करने वाला प्रभाव बाहर से आता है और हमारी प्रसुप्त शक्तियों को जगा देता है। तभी से हमारी उन्नति का प्रारम्भ होता है, आध्यात्मिक जीवन का आरम्भ होता है और अन्त में हम पावन और पूर्ण बन जाते हैं। यह स्फुरक शक्ति, जो बाहर से आती है, हमें पुस्तकों से प्राप्त नहीं हो सकती, एक आत्मा दूसरी आत्मा से ही प्रेरणा प्राप्त कर सकती है, किसी अन्य वस्तु से नहीं। हम जन्म भर पुस्तकों का अध्ययन करते रहें और बड़े बौद्धिक भी हो जाएँ, पर अन्त में हम देखेंगे कि हमारी आत्मा की कुछ भी उन्नति नहीं हुई है। यह आवश्यक नहीं है कि उच्च

www.the-comforter.org

श्रेणी के बौद्धिक विकास के साथ मनुष्य का आत्मिक विकास भी समतुल्य हो जाए। प्रत्युत हम प्रायः यही देखते हैं कि बुद्धि का विकास आत्मा की ही वेदी पर होता है।

बुद्धि की उन्नति करने में तो हमें पुस्तकों से बहुत सहायता प्राप्त होती है, पर आत्मा के विकास में उनसे लगभग शून्यप्राय ही सहायता प्राप्त होती है। ग्रन्थों का अध्ययन करते करते कभी कभी हम भ्रमवश ऐसा सोचने लगते हैं कि हमारी आध्यात्मिक उन्नति में इस अध्ययन से सहायता मिल रही है। पर जब हम अपना आत्म-विश्लेषण करते हैं, तब पता लगता है कि ग्रन्थों से केवल हमारी बुद्धी को ही सहायता मिली है, आत्मा को नहीं।

यही कारण है कि हर व्यक्ति आध्यात्मिक विषयों पर अद्भुत व्याख्यान तो दे सकता है पर जब करने का अवसर आता है तो वह अपने को बिल्कुल निकम्मा पाता है। कारण यह है कि जो बाह्य शक्ति हमें आत्मोन्नति के पथ में आगे बढ़ाती है, वह हमें पुस्तकों द्वारा नहीं मिल सकती। आत्मा को स्फुरित करने के लिए ऐसी शक्ति, किसी दूसरी आत्मा से ही प्राप्त होनी चाहिए।

जिस आत्मा से यह शक्ति मिलती है, उसे 'गुरु' या 'आचार्य' कहते हैं और जिस आत्मा को यह शक्ति प्रदान की जाती है, वह 'शिष्य' या 'चेला' कहलाता है। इस शक्ति के संप्रेषण के लिए पहले तो यह आवश्यक है कि जिस आत्मा से यह शक्ति संचारित होती है, उसमें उस शक्ति को अपने पास से दूसरे में संप्रेषित कर सकने की क्षमता हो, और दूसरी आवश्यकता यह है कि जिसको वह शक्ति संप्रेषित की जाए, उसमें उसको ग्रहण करने की क्षमता हो। बीज सजीव हो और खेत अच्छी तरह से जुता हुआ हो। जब ये दोनों शर्तें पूरी हो जाती हैं, तब धर्म की आश्चर्यजनक उन्नति होती है।

'धर्म का वक्ता अलौकिक हो और श्रोता भी वैसा ही हो।' और दोनो अलौकिक या असाधारण होंगे, तभी अत्युतम आत्मिक विकास सम्भव है, अन्यथा नहीं । ऐसे ही लोग यथार्थ

www.the-comforter.org

गुरु हैं और ऐसे ही लोग यथार्थ शिष्य। अन्य तो मानो धर्म का केवल खिलवाड़ करते हैं। वे थोड़ा सा बौद्धिक प्रयास तथा कुछ कौतूहलपूर्ण शंकाओं का समाधान करते रहते हैं। उनके बारे में हम कह सकते हैं कि वे मानो धर्म-क्षेत्र की केवल बाहरी परिधि पर खड़े हैं। पर उसकी भी कुछ न कुछ सार्थकता है-धर्म की सच्ची प्यास उससे जाग्रत हो सकती है, समय आने पर ही सब कुछ प्राप्त होता है। प्रकृति का यह एक रहस्यपूर्ण नियम है कि खेत तैयार होते ही बीज मिलता है। ज्यों ही आत्मा को धर्म की आवश्यकता होती है, त्योंही धार्मिक शक्ति को देने वाला कोई न कोई आना ही चाहिए। 'खोज करने वाले पापी की, भेंट खोज करने वाले उद्धारक से हो ही जाती है।' जब ग्रहण करने वाली आत्मा की आकर्षण-शक्ति पूर्ण और परिपक्व हो जाती है, उस समय उस आकर्षण का उत्तर देने वाली शक्ति आनी ही चाहिए।

पर मार्ग में बड़े खतरे भी हैं। एक खतरा यह है कि कहीं ग्रहीता आत्मा (शिष्य) अपने क्षणिक आवेश को यथार्थ धार्मिक पिपासा न समझने लगे। ऐसा हमें स्वयं अपने में भी मिलेगा। हमारे जीवन में प्रायः ऐसा घटित होता है कि जिस व्यक्ति पर हमारा बहुत प्रेम है, वह अचानक मर जाता है, उसकी मृत्यु से हमें क्षण भर के लिए धक्का पहुँचता है। हम सोचते हैं कि यह संसार हाथ से निकला जा रहा है, हमें संसार से कुछ उच्चतर वस्तु चाहिए और अब हम धार्मिक होने जा रहे हैं। पर कुछ दिनों के बाद वह तरंग निकल जाती है और हम जहाँ के तहाँ पड़े रह जाते हैं।

हमें अनेक बार इन आवेशों में धर्म की सच्ची पिपासा का भ्रम हो जाता है। पर जब तक इन क्षणिक आवेशों में हमें इस प्रकार का भ्रम होता रहेगा, तब तक हमारी आत्मा की वह सतत यथार्थ पिपासा जाग्रत नहीं होगी और हमें 'शक्ति-दाता' (गुरु) प्राप्त न होंगे।

अतः जब हमारे मन में यह शिकायत उठे कि हमें सत्य की प्राप्ति

www.the-comforter.org

नहीं हुई है, यद्यपि हम उसकी प्राप्ति के लिए इतने व्याकुल हैं, उस समय हमारा प्रथम कर्तव्य यह होना चाहिए कि हम आत्म-निरीक्षण करें और पता लगायें कि क्या हमें वास्तव में उस (सत्य या धर्म) की पिपासा है? अकसर तो यही दिखेगा कि हमीं उसके योग्य नहीं हैं, हमें धर्म की आवश्यकता ही नहीं है, हम में अभी आध्यात्मिक पिपासा ही नहीं है।

'शक्तिदाता' गुरु के लिए तो और भी अधिक कठिनाईयाँ होती हैं। बहुतेरे तो ऐसे हैं, जो स्वयं अज्ञान में डूबे रहने पर भी अपने अन्तःकरण में आहंकार के कारण अपने को सर्वज्ञ समझते हैं। इतना ही नहीं, वे दूसरों का भार अपने पर उठाना चाहते हैं और इस प्रकार 'अन्धा अन्धे को राह दिखावे' वाली कहावत चरितार्थ करते हुए अपने साथ उन्हें भी गड्ढे में ले गिरते हैं। संसार में ऐसों की ही भरमार है। हर कोई गुरु होना चाहता है, हर भिखारी लक्ष मुद्रा का दान करना चाहता है। जैसे वे भिखारी हँसी के पात्र हैं, वैसे ही ये गुरु भी।

तब प्रश्न यह है कि गुरु की पहचान हमें कैसे हो? सूर्य को दिखाने के लिए मशाल या दीपक की आवश्यकता नहीं होती। सूर्य को देखने के लिए हम मोमबत्ती नहीं जलाते। सूर्य का उदय होते ही उसके उदय होने का ज्ञान हमें स्वभावतः ही हो जाता है। उसी प्रकार जब हमें सहायता देने के लिए किसी जगद्गुरु का आगमन होता है, तब आत्मा को अपने स्वभाव से ही ऐसा लगने लगता है कि उसे सत्य की प्राप्ति हो गयी।

सत्य स्वयंसिद्ध होता है। उसे सिद्ध करने के लिए किसी अन्य प्रमाण की आवश्यकता नहीं होती। सत्य स्वयं प्रकाश होता है। वह हमारी प्रकृति की अन्तरतम गुहाओं तक को भेद देता है और सारी सृष्टि चिल्ला उठती है, 'यही सत्य है।' महान् आचार्य ऐसे ही होते हैं। पर हम तो इनकी अपेक्षा छोटे आचार्यों से भी सहायता पा सकते हैं। किन्तु जिनके पास से हम दीक्षा लेना चाहते हैं या जिन्हें हम गुरु बनाना चाहते हैं, उनके विषय में ठीक या

www.the-comforter.org

उचित राय कायम कर सकने के लिए पर्याप्त अन्तःशक्ति हममें बहुधा नहीं होती; इसलिए कुछ कसौटियों की आवश्यकता हैं जिस प्रकार शिष्य में कुछ लक्षणों का रहना आवश्यक है, उसी प्रकार गुरु में भी कुछ लक्षण होने चाहिए।

पवित्रता, यथार्थ ज्ञान-पिपासा और धैर्य- ये लक्षण शिष्य में अवश्य हों। अपवित्र आत्मा कभी धार्मिक नहीं हो सकती। सबसे बड़ी आवश्यकता इसी पवित्रता की है। सब प्रकार की पवित्रता नितान्त आवश्यक है। दूसरी आवश्यकता इस बात की है कि शिष्य को ज्ञान-प्राप्ति की यथार्थ पिपासा हो। प्रश्न यही है कि चाहता कौन है? हम जो चाहते हैं, वही मिलता है, यह पुराना नियम है। जो चाहता है, वह पाता है।

धर्म की चाह बड़ी कठिन बात है। इसे हम साधारणतः जितना सरल समझते हैं, उतना सरल नहीं है। फिर हम यह तो सदा भूल ही जाते हैं कि व्याख्यान सुनना या पुस्तकें पढ़ना, धर्म नहीं है। धर्म तो एक सतत् संघर्ष है। स्वयं अपनी प्रकृति का दमन करते रहना, जब तक उस पर विजय प्राप्त न हो जाए, तब तक निरन्तर लड़ते रहने का नाम ही धर्म है। यह एक या दो दिन, कुछ वर्षों या जन्मों का प्रश्न नहीं है। इसमें तो सैकड़ों जन्म बीत जायँ, तो भी हमें इसके लिए तैयार रहना चाहिए। सम्भव है, हमें अपनी प्रकृति पर तुरन्त विजय मिल जाय, या सम्भव है, सैकड़ों जन्म तक हमें यह विजय प्राप्त न हो, पर हमें उसके लिए तैयार रहना आवश्यक है। जो शिष्य इस भावना के साथ अग्रसर होता है, उसको सफलता मिलती है। और इसी जन्म में।''

केवल समर्थ सद्गुरु की शरण ले लो। भगवान श्री कृष्ण ने भगवद् गीता में कहा - 'सब धर्मों को त्याग कर मेरी शरण में आ जा, मैं तुझे सब पापों से मुक्त कर दूँगा, यह मैं दृढ़ प्रतिज्ञा करता हूँ।'

अतः सद्गुरु की शरणागत हो जाओ।

◆◆◆◆

www.the-comforter.org

कहानी

दृष्टिकोण

नारंग साहब और उनकी धर्मपत्नि रेणुका जी एक छोटे से शहर में रहते थे। दोनों बहुत ही साधारण परिवार से थे। मेहनत करके अपनी जीविका अर्जित करते थे। धर्म में दोनों की रुची थी। सुबह और शाम भगवान की पूजा-अर्चना करना उनका नित्य का नियम था।

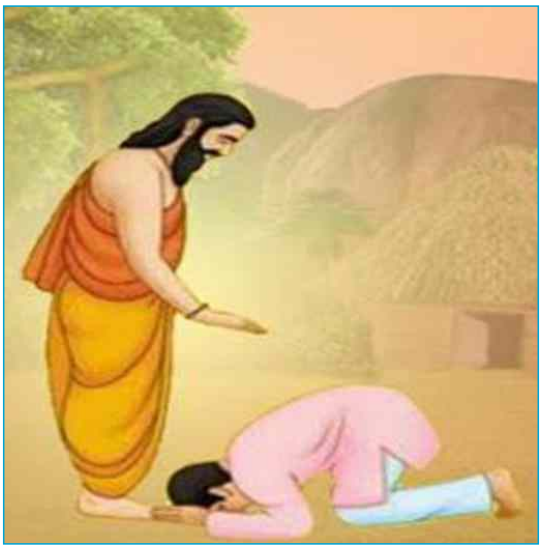

नारंग साहब एक कम्पनी में ऑफिसर थे और उनकी पत्नी घर का काम-काज सम्भालने के साथ -साथ कपड़े सिलाई का काम भी करती थी। स्वभाव से वो सन्तोषी और खुशमिजाज थी। उनके पतिदेव गम्भीर प्रकृति के थे। नारंग साहब को जिन्दगी से हमेशा ही कोई न कोई शिकायत रहती थी। कभी अपने बीते हुए दिनों से तो कभी आज की समस्याओं से और कभी आने वाले कल को लेकर ही वो बैचेन रहते थे। उनकी पत्नी रेणुका जी उन्हें बहुत समझाती पर उनपर कोई प्रभाव नहीं पड़ता था। इससे परेशान होकर यदा-कदा रेणुका जी एक जाने-माने पंडित जी को उनकी कुण्डली दिखाती थीं।

एक बार उनके शहर में स्वामी बटूकनाथ जी आए। वह बहुत ही पहुँचे हुए सिद्ध स्वामी थे। नारंग दम्पत्ति भी उनके दर्शन के लिए पहुँचे। वहाँ पहुँच कर उन्हें पता चला कि स्वामी जी गुरु दीक्षा भी देते हैं। इन दोनों ने सोचा चलो ये तो अच्छा हो गया घर बैठे ही गुरु भी मिल गए। यही सोचकर उन्होंने भी स्वामी जी से दीक्षा ले ली। स्वामी जी ने उन्हें प्रतिदिन 11 माला जपने के लिए एक मंत्र दिया और कहा कि अब से आपका नया जन्म हो गया है और अब आप इस साधना में जितना

www.the-comforter.org

निष्ठा से लगोगे उतना ही आपका कल्याण होगा।

दोनों बहुत खुश हुए और घर आ गए। शुरू-शुरू में नारंग जी इस बात से उत्साहित थे कि जीवन में गुरु आए हैं और मंत्र जाप करने के बढ़िया फल मिलेगा। वो हर समय इसी आस में रहते कि जैसे उनके मंत्र जाप करने से कुछ बढ़िया सा घटित हो जाएगा और जीवन बेहद आनन्द से भरपूर हो जाएगा। इस प्रकार साधना करते हुए 6 महीने बीत गए। जीवन पहले की तरह ही शांति से चल रहा था।

इसी बीच ऑफिस में प्रमोशन की लिस्ट आई और उनका नाम प्रमोशन की उस लिस्ट में नहीं था। नारंग साहब बड़े दुखी हुए। सोचने लगे मैंने तो रोज 11 माला मंत्र जाप किया उसके हिसाब तो मुझे अच्छा फल मिलना चाहिए था। ऐसी साधना से क्या फायदा? फिर गुरु बनाने का क्या फायदा? पर उनकी पत्नी ने उन्हें थोड़ा शांत किया और आगे भी साधना करते रहने के लिए प्रेरित किया। लेकिन धीरे-धीरे नारंग जी की साधना में शिथिलता आने लगी। मंत्र जाप कभी करते और कभी नहीं करते और ना कर पाने के उनके पास हमेशा सौ बहाने तैयार रहते थे।

जिन्दगी की गाड़ी चल रही थी कि इसी बीच नारंग साहब की तबीयत काफी खराब हो गई। बहुत सी दवाईयाँ आदि खाने के बाद वो एक महीने बाद ठीक हुए। उन्होंने फिर गुरु जी को कोसना शुरू कर दिया। कहने लगे ऐसे गुरु से क्या फायदा? फिर मैं क्यों मंत्र जाप करू? उनको जीवन में सिर्फ नकारात्मकता ही दिखने लगी।

उनकी पत्नी उनके इस व्यवहार से बहुत निराश हो गई। उनके समझाने पर वो चिढ़ जाते और उल्टा सीधा कहने लगते। एक दिन शाम को रेणुका जी और उनके पति चाय पीते हुए आपस में बातें कर रहे थे कि तभी नारंग साहब ने फिर से अपने जीवन की सारी कमियों को गिनाना शुरू कर दिया। अब उनकी पत्नी से नहीं सहा गया और वो थोड़ा तीखी आवाज में बोलीं, "आप अब जरा शांत हो जाइए और जो मैं पूछूँ

www.the-comforter.org

उसका जवाब हाँ या ना में देते जाइए।'' रेणुका जी के पति आज पत्नी के इस रूप को देख के थोड़ा सकपका गए और बोले, ''हाँ, ठीक है पूछो, क्या पूछना है?''

रेणुका जी ने पूछा, ''अच्छा, तो क्या आप रोज सुबह उगते हुए सूरज, उड़ती हुई चिड़िया, लहलहाते हुए खेत, जलते हुए दीये को देख सकते हैं?'' नारंग साहब बोले, हाँ, बिलकुल देख सकता हूँ।

क्या आप चिड़ियों की चहचहाहट, भौंरे की गुंजन, कोयल की कूक और बादलों की गड़गड़हाट को सुन सकते हैं? हाँ बिलकुल।

क्या आप स्वादिष्ट, गर्मा-गर्म खाने का स्वाद चख सकते हैं? नारंग साहब तिलमिला कर बोले, ''हाँ भाई, ये भी कोई पूछने की बात है?''

रेणुका जी ने पूछना जारी रखते हुए अगला प्रश्न किया।

क्या आप अपने मन में उठने वाले विचारों को, किताबों में पढ़ी हुई कविता को बोल सकते हैं? नारंग जी बोले बिलकुल! मैं तो हर समय अपने विचार तुमसे कहता ही रहता हूँ और अभी भी तो कह कर ही बता रहा हूँ।

रेणुका जी बोली तो फिर अगले सवाल का जवाब दीजिए।

क्या आप ताजी हवा और बारिश की बून्दों का स्पर्श महसूस कर सकते हैं?..... हाँ

क्या आप शरीर में यहाँ-वहाँ खुजली कर सकते हैं?..... हाँ

क्या आप पढ़-लिख सकते हैं? .... हाँ

क्या आप खाया हुआ भोजन पचा सकते हैं?..... हाँ

क्या आप चल-फिर सकते हैं? अपनी इच्छा के अनुसार उठ-बैठ सकते हैं? ..... हाँ

क्या आप आराम से मूल-मूत्र त्याग सकते हैं? ..... हाँ

क्या आप आराम से सांस ले सकते हैं? ..... हाँ

अब तक नारंग जी थोड़ा बेसब्र होने लगे थे। थोड़ा उखड़े हुए अन्दाज में बोले- ये सब पूछने से क्या मतलब है

www.the-comforter.org

तुम्हारा ?

रेणुका जी मुस्कराईं और बोलीं- अभी भी नही समझे आप। भगवान ने आपको कितने सारे अमूल्य उपहार मुफ्त में दिए हैं। इनमें से एक भी ना हो या बिगड़ जाए तो आदमी का जीवन नरक हो जाता है, सारा जीवन कष्टमय हो जाता है और आप हर समय यही गिनते रहते हो कि भगवान ने आपको क्या-क्या नहीं दिया।

आप देख सकते हो कि भगवान ने हमें एक अच्छा जीवन जीने के लिए सभी कुछ दिया है। जरूरत है तो बस इस अमूल्य जीवन को और सवाँरने की, अपनी सोच को सकारात्मक करके, सभी कार्यों में ईश्वर की कृपा देखने की। नारंग जी शांत होकर अपनी पत्नी की बातों पर गौर करने लगे।

तभी रेणुका जी ने कहा- क्या आपको पता है कि जिस समय अपका प्रमोशन नहीं हुआ उस समय तो आपकी नौकरी छूट जाने का पूरा योग था ? क्या आपको मालूम है कि आपकी जो बीमारी 1 महीने में ही ठीक हो गई वो आप के पूर्व जन्म के कर्मों और संस्कारों के हिसाब से तो 6 महीने चलनी चाहिए थी पर गुरु कृपा से आप एक महीने में ही ठीक हो गए ?

नारंग जी यह सब सुनकर हतप्रध हो गए। बोले तुम्हें कैसे पता ?

रेणुका जी बोलीं- अरे क्या बताऊँ ? आपकी इस नकारात्मक सोच की वजह से मैं परेशान थी और एक जाने माने पंडित जी को आप की कुण्डली दिखाती रहती थी। उन्होंने बताया था कि आगे जाकर आपका समय खराब है- नौकरी जाने का और लम्बी बीमारी का योग है। यह जानकर मैं बहुत चिंतित हो गई पर गुरुदेव के जीवन में आने के बाद चिंता की जगह ही नहीं रही क्योंकि अब जीवन की डोर उन्हें सौंप दी और पंडित के यहाँ जाने की जरूरत नहीं रही।

जब आपका वो समय आया और मैंने देखा कि आपका प्रमोशन तो नहीं हुआ पर साथ ही आप की नौकरी भी नहीं गई तो मैं समझ गई कि ये गुरु कृपा से ही सम्भव हुआ है और मैंने उन्हें

www.the-comforter.org

अन्तर्मन से प्रणाम किया। फिर आप बीमार हो गए। मैं मन ही मन सोचने लगी कि पंडित जी की भविष्यवाणी सत्य होने जा रही है पर तभी देखा कि आप एक महीने में ही बिलकुल स्वस्थ हो गए। मैंने फिर गुरुदेव को उनकी कृपा के लिए बहुत-बहुत धन्यवाद दिया।

अब तो आपको समझ आ ही गया होगा कि ईश्वर और गुरु हमें किस प्रकार पीछे से छुपकर सम्भालते रहते हैं। वो अपनी कृपा का हमें कभी पता ही नहीं चलने देते और हम अपनी इस मूढ़ बुद्धि से केवल उनकी कृपा में कमी ही ढूंढते रहते हैं। सत्य तो यह है कि ईश्वर और गुरु, कृपा करने के अलावा और कुछ जानते ही नहीं है। खोट तो हमारी दृष्टि में ही है जो हमेशा आधे-भरे हुए पानी के ग्लास में, पानी की जगह, खाली ग्लास ही देखती है।

इसलिए जीवन में अपना दृष्टिकोण हमेशा सकारात्मक रखें। आप देखेंगे कि केवल इतना करने भर से आपका जीवन पहले से कहीं बेहतर हो जाएगा।

www.the-comforter.org

विश्व शांति के लिए सामूहिक शक्तिपात दीक्षा

"उस परमसत्ता के लिए एक लाख लोगों को चेतन करने के लिए एक क्षण के समय की भी आवश्यकता नहीं। अगर मेरे सामने एक लाख लोग दीक्षा लेने बैठे हैं तो उनमें से सभी सकारात्मक लोग एक साथ चेतन हो जायेंगे, चाहे उनकी संख्या कितनी ही अधिक क्यों न हो। सामूहिक शक्तिपात दीक्षा बिना, विश्वशांति असम्भव है।"

–समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग

www.the-comforter.org

साधना विषयक बातें

गतांक से आगे...

योगमार्ग पर आराधनाशील साधक को विभिन्न प्रकार के पहलुओं का सामना करना होता है। कभी उतार, कभी चढ़ाव, मानसिक उद्वेग, कभी हँसी-खुशी, कभी बेबसी, उदासीनता, काम, क्रोध और न जाने इस योग मार्ग की यात्रा में कितने ही पड़ाव और हर मोड़ पर चौराहा और थोड़ी देर बाद दूसरे मोड़ पर फिर चौराहे आते हैं, जिससे साधक दिग्भ्रमित हो जाता है यदि उस पर सद्गुरुदेव की असीम कृपा बराबर न बनी रहे तो।

मानव से अतिमानत्व की यात्रा में, दिव्य रूपान्तरण के लिए सफलता तभी संभव है जब साधक अपने सद्गुरु के बताए पथ पर निष्कपट भाव से, गाढ़ी प्रीति रखते हुए पूर्ण समर्पण भाव से आराधना करें। श्री रामकृष्ण परमहंस, स्वामी विवेकानन्द, महर्षि श्री अरविन्द घोष, श्रीमां सहित कई प्राचीन योगियों के समय, उनके शिष्यों से उनका जो वार्तालाप हुआ है, उसको समय समय पर इस शीर्षक के अंतर्गत देंगे जिससे आराधनाशील साधकों को इस मार्ग में सहायता मिल सके।

---

www.the-comforter.org

यह सब बाहरी प्रकति से आता है। जैसे ही आये वैसे ही 'यह मेरा नहीं है' कह Reject (वर्जन) करो। बाहर से जो आता है उसे स्थान न मिलने से अंत में आ ही नहीं सकेगा।

'लोगों ने चोट पहुँचायी' मतलब तुम्हारे अहंकार ने चोट खायी। जितने दिन अहंकार रहेगा, उतने दिन उस पर आघात पड़ेगा ही। अहंकार को छोड़कर शुद्ध, समर्पित अंतःकरण में समभाव से काम करना होता है। यही है साधना का मुख्य अंग। ऐसा करने से आघात नहीं लगेगा, शक्ति को पाना भी आसान होगा।

भीतर से जो आवाज आयी है वह सच है। बहिश्चेतना के अज्ञान से सिर्फ भूलभ्रांति और व्यर्थ का कष्ट होता है, वहाँ सब कुछ अहं का खेल है।

भीतर ही रहना चाहिये-जिसके अंदर असली सत्य-चेतना, सत्य-भाव, सत्य दृष्टि है, वहाँ अहंकार, अभिमान, कामना या दावा रत्ती-भर भी नहीं रहना चाहिये, उसे ही Grow करने (पनपने) दो, तब शक्ति की चेतना तुम्हारे अंदर प्रतिष्ठित होगी, मानवी प्रकृति का अंधकार, विरोध और विभ्राट नहीं रहेगा।

ऐसी बात, पहले भीतर से पाना होगा शक्ति को, बाहर से नहीं। भीतर में पूर्णरूपेण पा लेने के बाद बाहर जो भी आवश्यक हो वह Realised (सिद्ध) हो सकता है। दो-एक को छोड़ कोई भी अभी तक इस सत्य को अच्छी तरह नहीं समझ पाया है।

प्रश्नः सपने में देखा कि एक पुरुष सामने आ खड़ा हुआ है। उसकी छाती पर चढ़कर मैंने उसे मार डाला और उसके पुरुषांग को काट डाला।... तब मैंने देखा कि मेरा रूप काली की तरह हो उठा है।

उत्तरः- यह पुरुष कोई vital force (प्राणिक शक्ति) हो सकता है, शायद sex impulse (कामावेग) की कोई force (शक्ति) हो। इस अनुभूति से ऐसा लगता है कि तुम्हारी प्राण-सत्ता ने उसे काट फेंका। साधक की प्राण-सत्ता को ऐसा ही योद्धा होना चाहिये। खराब प्राण-शक्ति के वश में न हो, भयभीत न हो उसका सामना करो और उसका नाश करो।

प्रश्नः- मैं देख रही हूँ कि मेरा मन खूब शांत, पवित्र और आलोकित हो विश्वमय हो रहा है।

उत्तरः- बहुत ही सुन्दर अनुभूति है।

www.the-comforter.org

इससे लगता है कि mind (मन) में ऊर्ध्व चेतना उतर रही है, आत्मा की उपलब्धि को नीचे उतार ला रही है। तभी मन ऐसा शांत, पवित्र, आलोकमय और विश्वमय होता है क्योंकि आत्मा या true (यथार्थ) सत्ता वैसी ही शांत, पवित्र, आलोकमयी और विश्वमयी है।

हां, ऐसे ही ऊर्ध्व चेतना को शांत, विश्वमय भाव लेकर नीचे उतरना चाहिये, पहले मन में, बाद में हृदय में (emotional vital and psychic में)–उसके बाद नाभि में और नाभि के नीचे vital (प्राण) में, अंत में सारे physical (भौतिक) पर छा जाये।

नीला प्रकाश मेरा है, श्वेत प्रकाश मां का–जब ऊर्ध्व चेतना (higher consciousness) विश्वमय भाव लेकर आधार में उतरना आरंभ करती है तब नीले प्रकाश का दिखना बहुत स्वाभाविक होता है।

भीतर शक्ति के साथ युक्त रहना चाहिये और वहाँ से बाहरी प्रकृति के दोषत्रुटियों को देखना चाहिये, देखने पर न विचलित होना चाहिये न निराश। स्थिर रहते हुए उसका प्रत्याख्यान कर शक्ति के प्रकाश और बल से उसमें सुधार लाना चाहिये।

जिस चिंता की बात कह रही हो उसे दूर करना चाहिये। मैंने जो चाहा हुआ नहीं, जिसे पाने की आशा की वह मिली नहीं। कैसे करूंगी, मेरा तो कल भी नहीं होने का–प्राणों की चाहना और पाने न पाने की चिंता–ये सब अश्रद्धा की बातें हैं। शक्ति के पास से, मैं क्या पा सकूंगी यह सोच है अहं की। शक्ति को किस तरह अपना सर्वस्व दें – यह भाव है अंतरात्मा का–साधकों में सभी छिपी बाधाओं के मल में है यही पाने की भावना। जो सर्वस्व भगवान् को देता है वह भगवान को और भगवान का सब कुछ पाता है. न चाहने पर भी पाता है। जो इस और उस की मांग करता है उसे वह मिलता है पर भगवान् नहीं मिलते।

बाधाओं से सामना होने पर कोई यदि शक्ति पर निर्भर कर सचेतन रह,

www.the-comforter.org

शक्ति के जोर से, धीर भाव से उन्हें परे ठेल देता है, चाहे वे जितनी बार भी क्यों न आयें तो अंततः वह बाधाओं से मुक्त होगा ही होगा।

It is good- (यह अच्छा है)। सब समय शक्ति पर ऐसी संपूर्ण आस्था

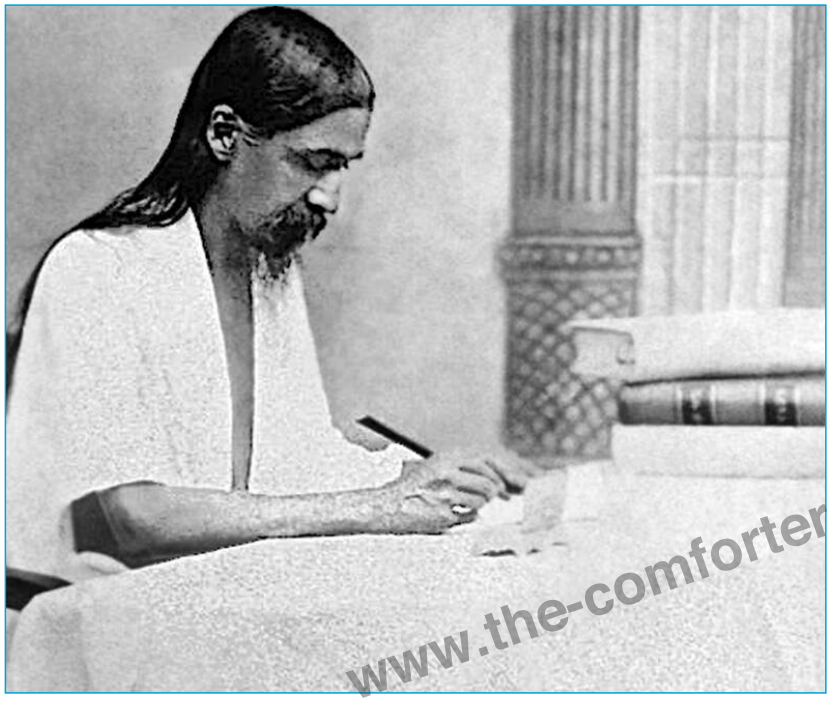

रखनी चाहिये कि हम उसी के हाथ में हैं, उसकी शक्ति से सब कुछ होगा। ऐसा होने पर बाधा के लिये न दुःख आयेगा न निराशा।

ऐसी अवस्था होनी चाहिये कि चेतना तो रहेगी, भीतर शक्ति के साथ युक्तऔर मां की शक्तिकाम करायेगी, बाहरी चेतना उस शक्ति का यंत्र बन काम करेगी-किंतु ऐसी अवस्था पूरी तरह सहज ही नहीं आती। साधना द्वारा धीरे-धीरे आती है और धीरे धीरे complete (पूरी) होती है।

साधना-पथ में बहुत बार शून्यता का अनुभव होता है-शून्य अवस्था से विचलित नहीं होना चाहिये। शून्यता बहुत बार नूतन उन्नति की राह prepare (तैयार) करती है। पर नजर रखनी होगी कि शून्यता की अवस्था में कहीं विषाद या चंचलता न आ जाये।

यही ठीक है। देह के मरने से मुक्ति नहीं मिलती, इसी देह में नवीन है। और उसी नवीन चेतना की शक्ति चाहिये।

ऐसी अवस्था ही तो चाहिये-अंदर सब विराट, शांत, नीरव, शक्तिमय और आनंदमय।

'स' के बारे में लिखा था कि 'प' की अधखायी रोटी ग्रहण करना बड़ी

www.the-comforter.org

भूल थी। ऐसी जगह में उस व्यक्ति में यदि कोई खराब शक्ति अधिकार किये हुए हो तो इस आहार को साधन बना वह शक्तिखानेवाले के शरीर पर, प्राण पर आक्रमण कर सकती है।

प्रश्नः- 'त' और 'स' के साथ और दिनों से ज्यादा बातें करने के कारण सिर में बहुत दर्द हो रहा था और बेचैनी महसूस कर रही थी। फिर जब थोड़ा शांत हुई, तुम्हें पुकारा और मेरे भीतर एक 'तुम'-मय तीव्र इच्छा और विश्वास जगा कि यह दूर होगी ही। थोड़ी देर बाद देखा, सचमुच वह दूर हो गया है और मैं असीम शांति, आनंद, प्रेम और पवित्रता से और तुमसे भर उठी हूँ।

उत्तरः- यही है असली उपाय- इसी उपाय से चेतना के lowering और deviation (निम्न गति और भ्रांत गति) से मुक्ति मिल सकती है।

प्रश्नः- सारी रात मानो अंधकारमय अचेतन, तमोमय जगत् में मुर्दे की तरह पड़ी रहती हूँ। सवेरे उठ नहीं पाती। जबर्दस्ती उठती हूँ तो देखती हूँ कि शरीर बहुत ही जड़-सा, अलस, बलहीन, उत्साहहीन शांति और आनंदरहित हो जाता है। ऐसा होने पर नींद को मुझसे दूर कर दो।

उत्तरः- अचेतना की नींद ऐसी ही होती है। पर नहीं सोने से अचेतना में दबाव बढ़ जाता है, कम नहीं होता। ऐसे में एकमात्र उपाय है ऊपर से प्रकाश और चेतना को उतार लाना।

बाधा की अवस्था कभी भी स्थायी नहीं रह सकती-शक्ति की गोद से तुम दूर जा भी नहीं सकती-कभी-कभार पर्दा पड़ जाता है केवल इसलिये बाधा के सिर उठाने पर डरो मत, दुःखी मत होओ, बाधा को Reject (परे) करते-करते, शक्ति को पुकारते पुकारते अच्छी अवस्था लौट आती है-अंत में बाधा के उठने पर भी वह स्थायी यथार्थ अवस्था को cover नहीं कर सकती (ढक नहीं सकती)।

क्रमशः अगले अंक में...

www.the-comforter.org

साधक की अनुभूति

मैं (निकिता), नागौर जिले के कुचेरा तहसील से हूँ। मैंने अपने परिवार के साथ 2010 में गुरुदेव से जोधपुर आश्रम में दीक्षा ली।

जब मैं 10 वीं कक्षा में पढ़ती थी तब इंजेक्शन के साइडइ इफेक्ट के कारण मुझे त्वचा रोग हो गया था, जो काफी इलाज कराने पर भी ठीक नहीं हुआ। अंत में गुरुदेव की कृपा से वह रोग दूर हो गया।

पिछले साल जब मैं 12 वीं कक्षा में थी तब मुझे पेट में दर्द रहने लगा। बोर्ड परीक्षा आने वाली थी और इस दर्द के कारण मैं बहुत परेशान रहने लगी। खाना खाते ही मुझे उल्टी और दस्त हो जाते। फिर मैंने नागौर में डॉक्टर महावीर आर्य को दिखाया और उसके बाद अजमेर में डॉक्टर एम. पी. शर्मा को दिखाया। डॉक्टरों ने आंतों में सूजन बताया। रोज 6-7 टेबलेट लेने पड़ते थे। मेरे स्वास्थ्य में कोई सुधार नहीं हो रहा था।

कुछ महीनों पहले मेरी माँ की तबीयत भी खराब हो गई। मैं अपने दर्द को भूल गई और अपनी माँ के स्वास्थ्य के लिए सघन मंत्र जाप करना शुरू कर दिया। एक दिन ध्यान में मुझे कुछ अलग प्रकार की यौगिक क्रियाएँ हुईं। उसके बाद से ही मेरे पेट दर्द की समस्या दूर हो गई। अब मैं कोई दवाई भी नहीं लेती। आज मैं बिलकुल स्वस्थ हूँ और कुछ भी खा सकती हूँ। गुरुदेव की कृपा से मेरा कॉलेज में एडमिशन भी हो गया है।

संजीवनी मंत्र का सघन जाप करने से मुझे नाद भी सुनाई देता है। एक दिन ध्यान के समय गुरुदेव मुझे भारत के मानचित्र पर दिखाई दिए। गुरुदेव से यही प्रार्थना करती हूँ कि उनका आशीर्वाद हमेशा मेरे परिवार पर बना रहे। गुरुदेव के चरणों में कोटि-कोटि प्रणाम।

-निकिता, नागौर

www.the-comforter.org

गतांक से आगे...

मानस की नीरवता

''एक बार जब नीरवता हमारे वश में आ गई, तब हम अनिवार्यतः मानस जगत् के आधिपति बन गये क्योंकि अनन्त काल तक एक ही तरंग-दैर्ध्य पर चिपके रहने के बदले, हम तरंगदैर्ध्यों की सारी सरगम पर घूम सकते हैं और जो जी चाहे ले या छोड़ सकते हैं।''

हाँ, हम अपने विचार बदलते रहते हैं, पर विचारों का बदलना प्रगति करना बिल्कुल नहीं, वह पहले से ज्यादा ऊँची या तेज स्पन्दनशैली पर उठ जाना नहीं है, वह उसी क्षेत्र के मध्य में एक घुमेरी और खा लेना भर है। इसीलिए श्री अरविन्द चेतना के रूपान्तर के बारे में कहा करते थे।

साधक जब एक बार देख लेगा कि उसके विचार बाहर से आते हैं और सैकड़ों बार यह अनुभव भी कर लेगा, तब सच्चे मानसिक प्रभुत्व की कुंजी उसके हाथ आ जायेगी, क्योंकि जब एक विचार हमारे अन्दर पहले ही अच्छी तरह जम चुका है और हम उसे अपना समझने लगे, तब उससे पीछा छुड़ाना कठिन है, परन्तु उन्हीं विचारों को जब हम बाहर से आते देखें तब उन्हें बाहर निकाल फेंकना आसान है। एक बार जब नीरवता हमारे वश में आ गई, तब हम अनिवार्यतः मानस जगत् के आधिपति बन गये क्योंकि अनन्त काल तक एक ही तरंग-दैर्ध्य पर चिपके रहने के बदले, हम तरंगदैर्ध्यों की सारी सरगम पर घूम सकते हैं और जो जी चाहे ले या छोड़ सकते हैं। पर अब हम स्वयं श्री अरविन्द द्वारा वर्णन किये गये उस अनुभव को देखें जो उन्हें पहली बार एक अन्य योगी के समीप हुआ जिसका नाम भास्कर लेले था और जो उनके साथ तीन दिन रहे। सब मनुष्य जिनका मानसिक विकास हो गया, जो सामान्य स्तर से ऊपर उठ गये हैं, उन्हें किसी न किसी तरह, कम से कम विशेष अवसरों पर और विशेष उद्देश्य से, मन के दोनों भागों को अलग अलग करना ही पड़ता है। क्रियारत भाग जो विचारों

www.the-comforter.org

का एक कारखाना है, और शान्त, प्रभुतासंपन्न भाग जो साथ-साथ साक्षी और संकल्प शक्ति है, जो विचारों का निरीक्षण करता है, निर्णय देता है, निराकरण, बहिष्कार, ग्रहण करता है, संशोधन और परिवर्तन का निर्देश करने वाला है, मानस का गृह-स्वामी, स्वराट्, सम्राट है।

योगी उससे भी आगे बढ़ता है - वह केवल वहाँ ही प्रभु नहीं बल्कि मन में रहते हुए भी एक तरह से उससे बाहर निकल जाता है और उसके ऊपर या बिल्कुल पीछे प्रतिष्ठत होकर स्वच्छन्द रहता है। उस पर विचारों के कारखाने की उपमा ठीक लागू नहीं होती क्योंकि वह देखता है कि विचार बाहर से, विश्व मानस से अथवा सार्वभौमिक प्रकृति से आते हैं, कभी वे गठित और स्पष्ट होते हैं, कभी अव्यवस्थित होते हैं और बाद में हमारे ही अन्दर कहीं उनका निर्माण होता है। हमारे मन का मुख्य काम है या तो इन विचार-तरंगों को (प्राणिक तरंगों और सूक्ष्म भौतिक शक्ति तरंगों को भी) जवाब में ग्रहण करना अथवा त्याग देना, या हमारे चारों ओर की प्रकृति-शक्ति में से आये हुए विचार-द्रव्य को (अथवा प्राणिक प्रवृत्तियों को) एक व्यक्तिगत मानसिक रूप देना।

मुझे यह दिखा देने के लिए मैं लेले का अति आभारी हूँ। उसने कहा, 'ध्यान में बैठ जाओ, पर विचार मत करो, केवल अपने मन को देखो; तुम विचारों को उसके अन्दर प्रवेश करते हुए देखोगे; उनके प्रवेश कर सकने से पहले ही उन्हें अपने मन से दूर फेंकते जाओ, जब तक तुम्हारा मन पूर्ण नीरवता के समर्थ न बन जाये।' विचारों का प्रत्यक्ष रूप से मन में बाहर से आने के बारे में मैंने पहले कभी नहीं सुना था परन्तु इसकी सच्चाई अथवा संभावना पर मुझे सन्देह भी नहीं हुआ। बस मैं बैठ गया और उसे कर डाला। एक क्षण भर में मेरा मन ऊँचे पर्वत-शिखर के निर्वात वायुमंडल की तरह नीरव हो गया और तब मैंने एक विचार फिर दूसरा विचार स्थूल रूप में बाहर से आता हुआ देखा। वे प्रवेश करके मस्तिष्क पर अधिकार

www.the-comforter.org

जमा सकें इससे पहले ही मैंने उन्हें दूर फेंक दिया और तीन दिन में, मैं विचार मुक्त हो गया। उस समय से मेरा मन सिद्धान्ततः एक स्वच्छन्द प्रज्ञा, एक सार्वभौमिक मानस बन गया, जो विचारों के कारखाने के मजदूर की तरह व्यक्तिगत विचारों में संकीर्ण दायरे में सीमित न रह कर, सत्ता के समस्त प्रान्तों से ज्ञान प्राप्त करने वाला बन गया और इस विशाल दृश्य-जगत् तथा विचार-जगत् में से अपनी इच्छानुसार ग्रहण कर लेने की स्वतन्त्रता उसे प्राप्त हो गई।

मानस की छोटी चहारदीवारी जिसके अन्दर वह अपने आपको सुखी और बड़ा बुद्धिमान् समझता था, उसमें से बाहर निकलने पर जब साधक पीछे मुड़ कर देखता है तो उसके अन्दर यह प्रश्न उठता है कि मैं ऐसे कारागार में कैसे रह सका। सबसे अधिक आश्चर्य उसे होता है यह देख कर कि किस तरह वर्षों तक लगातार उसका जीवन अनेक असंभवों से घिरा हुआ था और मनुष्य किस तरह कठघरे में बंद रहते हैं ; 'हम यह नहीं कर सकते, हम वह नहीं कर सकते, यह इस नियम के विरुद्ध है, उस नियम के विपरीत है, यह असंगत है, वह अस्वाभाविक है, वह असंभव है, इत्यादि।' और उसे पता चलता है कि सब कुछ संभव है और वास्तविक कठिनाई यह है कि हम विश्वास करते हैं कि यह कठिन है। एक तरह के विचारशील घोंघे के समान अपने मानसिक खोल के अन्दर बीस तीस साल बंद रहने के बाद वह अब खुली हवा में साँस लेना शुरू करता है।

अब वह यह भी देखता है कि अन्तर-बाह्य संबंधी जो शाश्वत् विरोध चला आ रहा था उसका भी समाधान हो गया, वह भी हमारे मन की जमी हुई कठोर पर्तों का ही एक भाग था। असल में 'बाह्य' सब जगह अन्दर है ! हम सर्वत्र हैं ! यह समझना भारी भूल है कि यदि हम शान्ति, सौन्दर्य, निर्जन देहात की उत्तम परिस्थितियाँ एकत्र कर सकते तो यह अपेक्षाकृत कहीं सरल हो जाता : सदा ही कुछ न कुछ हमारा ध्यान बँटाने के लिये सर्वत्र रहेगा और कहीं अच्छा हो

www.the-comforter.org

यदि हम अपनी चहार दीवारी ढहा कर उस समस्त 'बाह्य' को आलिंगन करने का निर्णय कर लें – तब हम सर्वत्र अपने घर में होंगे।

कर्म–ध्यान संबंधी विरोध की भी यही बात है। एक बार साधक ने अपने अन्दर नीरवता स्थापित कर ली तो उसे यह आभास तक होगा कि ध्यान एक काम बन सकता है, चाहे वह नहाने–धोने में लगा हो, चाहे अपना व्यापार कर रहा हो, पराशक्ति उसमें प्रवाहित होती रहती है। हमेशा के लिए उसका ठिकाना कहीं और बन गया। और अन्ततः वह देखेगा कि अपनी शान्ति थोड़ी भी भंग किये बिना ही अपने काम में वह पहले से अधिक पारंगत, अचूक और सबल होता जा रहा है : मनस्तत्त्व भी शान्त हो गया है, इतना शान्त हो गया है कि कुछ भी उसे विक्षुब्ध नहीं करता।

यदि विचार आते हैं या काम–काज होता है,... तो वे मन में से उसी तरह गुजर जाते हैं जैसे खगसमूह निष्पन्द वायु में आकाश से गुजर जाता है। वह गुजर जाता है, कोई हलचल नहीं करता, कोई निशान नहीं छोड़ता। यदि सहस्र चित्र अथवा उग्रतम घटनाएँ भी उसके मन के अंदर से गुजर जायें तब भी नीरवता बनी रहती है मानो मानस तन्त तक एक शाश्वत, अविनाशी शान्ति का तत्त्व हो। ऐसी शान्ति को प्राप्त हुआ मन कार्य करना शुरू कर सकता है, प्रचण्ड और प्रबल रूप से भी, किन्तु उसकी मूलभूत निश्चलता बनी रहेगी – कुछ भी अपने आप से प्रवर्तित न करके, ऊपर से ग्रहण करके उसे मानसिक रूप देगा, अपना कुछ भी उसमें जोड़ेगा नहीं, शान्त और निस्संग रहेगा, पर सत्य का आनन्द और उसके संचार का समृद्ध ओज और ज्योति उसके साथ विद्यमान रहेंगे।

यहाँ यह स्मरण कराना उचित है की श्री अरविन्द उस समय एक क्रान्तिकारी आन्दोलन का संचालन कर रहे थे और भारतवर्ष को छापामार युद्ध के लिए तैयार कर रहे थे।

क्रमशः अगले अंक में...

www.the-comforter.org

गतांक से आगे...

सिद्ध-योगियों की महिमा

साधकों के ज्ञान बोध के लिए स्वामी शिवोमतीर्थ महाराज की पुस्तक 'अंतिम रचना' के लेख क्रमशः शुरू किये हैं, आशा है साधकों की आराधना में सहायक सिद्ध होंगे। उनको प्राचीन काल की आराधना की कठिनाईयों के बारे में जानकारी मिलेगी, कितनी कठिन आराधना थी और सद्गुरुदेव सियाग ने अति सहज में सिद्धयोग को धरती पर मानव मात्र के कल्याण के लिए उतारा है।

योगीजन इस दिखावटी खेल का भी आनन्द लेते हैं। जो भी हो एक बात स्पष्ट है कि लल जन्म-जन्मान्तर की योगिनी थी जो प्रारब्धवशात् माया के जन्म-मरण रूपी चक्र तथा बार-बार जीवन धारण करने के क्रम को देखने तथा सहन करते रहने पर विवश थी, किन्तु उसे इस सारे घटना क्रम का ज्ञान बना रहता था। इस ज्ञान की निरन्तरता कभी भी भंग नहीं हुई। वह न केवल पूर्व जन्मों, उनमें घटित होने वाली घटनाओं तथा भोगे गए सभी भोगों से पूरी तरह परिचित थी, अपितु भावी जन्मों, उनमें सहन करने योग्य दुखों-सुखों तथा जीवन में आने वाली अनुकूलताओं प्रतिकूलताओं से भी पूर्ण रूपेण अवगत थी।

आज भौतिक वैज्ञानिक युग में लोग भले ही इन बातों पर विश्वास न करते हों किन्तु योग भी एक विज्ञान है। इसके सिद्धान्त तथा नियम हैं। योगियों ने भी कई प्रकार की आन्तरिक अनुभूतियाँ प्राप्त की हैं तथा कई प्रकार की विभूतियों का प्रदर्शन भी किया है। यह विज्ञान भौतिक विज्ञान की परिधि से अतीत है, जिससे भौतिक विज्ञानवादियों को इसे समझने में कठिनाई आती है।

घर छोड़ने के पश्चात् लल का समय प्रायः जंगलों, बीहड़ों, नदी घाटों, सुनसान खाण्डहरों, गिरि, कन्दराओं तथा पर्वत शिखरों पर ही

www.the-comforter.org

व्यतीत होने लगा। उस समय काश्मीर का अधिकांश भाग जंगलों से ढका था, जिनमें जंगली फलों का बाहुल्य था जगह-जगह पानी के झरने थे। ऐसे में उदर-पूर्ति लल के लिए कोई समस्या नहीं थी। कई-कई दिन निरन्तर व्यतीत हो जाते तथा वह किसी को दिखाई तक नहीं देती थी। इस बीच उसने जंगल में, एकान्त में, वास करने वाले कई भक्तों, योगियों, तपस्वियों, संतो तथा फकीरों के दर्शन किए। उनके साथ सत्संग किया, उनका आशीर्वाद ग्रहण किया। वह कुछ ऐसे एकान्त प्रेमी सूफी संतों के सम्पर्क में आई जिनका उसके जीवन के विकास में अत्यधिक महत्त्व रहा। सूफी मत प्रेम-प्रधान मार्ग है तथा लल भी प्रेम की दीवानी थी। सूफी मत भी आडम्बरों के विरुद्ध उदारवादी मत है। लल भी रूढ़िवाद तथा प्रचलित कर्मकाण्ड के विरुद्ध थी। अतः उस प्रेम दीवानी विरहणी का सूफी मत के सिद्धान्तों के प्रति झुकाव होना स्वाभाविक ही था।

कुछ लोगों की ऐसी भी मान्यता है कि लल ने सूफी मत से प्रभावित होकर इस्लाम धर्म ग्रहण कर लिया। किन्तु ऐसा वही लोग कहते हैं जिनको लल की आन्तरिक मानसिक स्थिति तथा उसके साधन-क्रम का पता नहीं। लल एक अत्यन्त गंभीर साधिका थी। वह कहां-कहां जाती? किसकिस को मिलती थी? इस संबंध में वह मौन धारण किए रहती थी। पुस्तक में आगे चलकर आपको पता लगेगा कि लल की कई गुप्त बातें थीं जिनका किसी को पता नहीं था। साहित्यकार तथा इतिहासकार उन्हीं बातों का वर्णन कर सकते हैं जिनकी उन्हें जानकारी होती है। बाकी की बातों के लिए वह अनुमान लगाया करते हैं। लल एक उदार-चित्त महिला थी जिसके मन में जाति-सम्प्रदाय इत्यादि गौण थे। वह हिन्दु थी, ब्राह्मण थी, किन्तु उसने अपने-आप को किसी सम्प्रदाय के साथ नहीं जोड़ा न-उसने कोई नया सम्प्रदाय चलाया।

वह सम्प्रदाय, देश, जाति आदि

www.the-comforter.org

सीमाओं को आध्यात्मिक उत्थान में विघ्न मानती थी। ऐसे में एक सम्प्रदाय का त्याग तथा दूसरे के ग्रहण की कल्पना करना भी, लल के साथ अन्याय होगा। वह हिन्दू होकर भी, किसी मुसलमान की अपेक्षा अधिक मुसलमान थी। हिन्दू होकर भी, हिन्दुओं की कई बातों की विरोधिनी थी। वह हिन्दू तथा मुसलमान की संकुचित भावना से बहुत ऊपर उठ चुकी थी। हां ! यह बात अवश्य है कि सूफी संतों तथा उनके सिद्धान्तों की ओर लल का रुझान देखकर, कुछ लोगों ने, उसके इस्लाम कबूल कर लेने की कल्पना कर ली हो। वह हिन्दू तथा मुसलमान, दोनों सम्प्रदायों में एक समान आदरणीया एवं पूज्या थी।

क्रमशः अगले अंक में...

गतांक से आगे...

रूपान्तरण (Transformation)

''आवश्यक है कि अच्छी हो या बुरी, स्वयं परिपाटी ही बदली जाये, क्योंकि अच्छे के साथ अनिवार्य रूप से बुरा जुड़ा हुआ है। सब चमत्कार केवल हमारी दीनता का उलटा अथवा कहना चाहिए सीधा पहलू भर है। पर जरूरत हमें एक सुधरे-सँवरे संसार की नहीं, नये संसार की है। एक 'उच्च प्रकार का समाहित वातावरण हमें नहीं चाहिए; बल्कि यदि असंगत न रहे तो हम कह सकते हैं कि निम्न प्रकार के समाहित वातावरण की जरूरत है, यहाँ सभी कुछ पुण्यधाम हो जाना चाहिए।''

यह सारा संसार ही एक विराट, दिव्य प्रतीक है। विज्ञान दृश्य व्यापारों का विश्लेषण करता है, केन्द्राकर्षण, गुरत्व, परमाणु-विस्फोट, आदि को समीकरण सूत्रों में बाँधता है, पर वह केवल कार्य को ही स्पर्श करता है, कभी सच्चे कारण तक नहीं जाता। योगी कार्य से भी पहले कारण को देखता है। एक वैज्ञानिक कार्य के आधार पर कारण का पता लगा सकता है, जबकि योगी कारण के द्वारा कार्यों का आकलन करता है। वह पहले से विद्यमान कारण के द्वारा उन कार्यों का ज्ञान प्राप्त कर सकता है, जो अभी अस्तित्व में नहीं आये।

अगले दिन होने वाली दुर्घटना को वह पीछे की ओर, पहले से विद्यमान दुर्घटना-शक्ति द्वारा जान सकता है। वैज्ञानिक काम लेता है कार्य से और कभी भारी विपद खड़ी कर सकता है। योगी पकड़ता है कारण को, या कहना चाहिए कि वह उस आदि कारण के साथ एकात्म हो जाता है, और कार्य को अथवा श्री अरविन्द के शब्दों में 'आदतों' को, जिन्हें कि हम नियम-विधान कहते हैं, बदलने में समर्थ रहता है। क्योंकि इसमें संदेह नहीं कि हमारे सब प्राकृतिक कार्य, जिन्हें हमने नियमों-विधानों के खाते में संग्रह कर रखा है, पीछे की ओर

www.the-comforter.org

विद्यमान शक्तियों की अभिव्यक्ति हेतु एक उपयुक्त आधार के अतिरिक्त कुछ नहीं होते, ठीक उसी तरह जैसे जंत्र-मंत्र के प्रयोग में आह्वान की गयी शक्तियाँ अपने आपको व्यक्त कर सकें इसके लिए एक विशेष विधि

की, अनुष्ठान संबंधी यंत्रों की, कुछ संघटकों की आवश्यकता पड़ती है। यह सारी दुनिया एक बड़ा भारी जादू है, ऐसा जादू जो कभी बंद ही नहीं होता। यह पार्थिव यंत्र, ये सारे संघटक जिन्हें हमने अटल मान बड़ी सावधानी से विधान-संहिता में संग्रह किया है, हमारे नियम जिन्हें हम मंत्रों की तरह अचूक समझते हैं, मात्र एक परिपाटी हैं।

यदि कार्यों से सम्मोहित न होकर हम पश्चवर्ती कारण में चले जायें, उस अमर जादूगर से जा मिले तो पार्थिव अनुष्ठान पद्धति बदल सकती है।

भारतवर्ष की एक कहानी है कि एक ब्राह्मण धर्मानुष्ठान के समय नित्यप्रति घर की पालतू बिल्ली को बँधवा दिया करता था ताकि बीच में विघ्न न पड़े। पीछे वह ब्राह्मण स्वर्ग सिधार गया और बिल्ली भी मर गयी। अब उस ब्राह्मण का पुत्र पूजा-पाठ कराने लगा। उसने एक बिल्ली मोल मँगवाई और हवन करते समय उसे बड़े ध्यान से बाँध कर रखा ! सो पिता से पुत्र तक वह बिल्ली अनुष्ठानसिद्धि का आवश्यक उपकरण बन गयी। शायद हमारे अटल- अनिवार्य नियमों में कई

www.the-comforter.org

छोटी-छोटी बिल्लियाँ ही घुसी बैठी हैं। यदि हम भौतिक अवलंब के पीछे छिपी शक्ति तक, श्रीमाँ के शब्दों में उसके 'सत्य स्पंदन' तक जायें तो इस महती लीला का पता चलने लगता है। कितनी दूर है वह उस जड़ता से जो कि हम उसके नाम में जोड़ा करते हैं। हमारी अनुष्ठान पद्धति में से एक भू-आकर्षण की ही बात लीजिये। इन व्यापारों के पीछे वह चीज है जिसे प्राचीन योगियों ने 'वायु' कहा है। वही केन्द्राकर्षण का और चुम्बकीय क्षेत्रों का भी कारण है (जैसा कि श्री अरविन्द ने सन् 1926 के इस संभाषण में आगे बताया है) और इस प्रकार एक योगी के लिए अंततः गुरुत्वाकर्षण को अतिक्रमण करना संभव हो जाता है। सौर अथवा न्यैष्टिक अग्नि के पीछे है यह मूलभूत अग्नि, यह ब्रह्मजात दिव्य अग्नि जो सर्वत्र विद्यमान है : 'सरित्सरोवर के, वनोपवन के, स्थावरजंगम जगत् के गर्भ से जन्म लेने वाला यह शिशु शिला तक के अंदर विराजमान है' ऐसा ऋग्वेद में वर्णन है (१.७०.२)। वह 'तप्त सुवर्ण-रज' जिसका कि श्रीमाँ ने उल्लेख किया है यही अग्नि है। वही इस कार्य के पीछे वर्तमान कारण है, अणुसंबंधी पार्थिव अवलंब के पश्चवर्तिनी आद्याशक्तिहै : 'अन्य अग्निशिखायें तेरे स्कंध से निकली शाखायें मात्र हैं' (१.५९.१)। श्री अरविन्द ने और उन ऋषियों ने क्योंकि जड़तत्त्व के अंतरस्थ इस दिव्य अग्नि का, 'अंधकार के गर्भ में सूर्य' का साक्षात्कार कर लिया था, इसीलिए वे हमारी सब प्रयोगशालाओं से पूर्व उसके अणुसंबंधी पार्थिव कार्य की, और सौर समेकन की जानकारी रखते थे; और इसीलिए, कारण का ज्ञान होने से ही, उन्होंने रूपांतर की बात करने का साहस भी किया है।'

एवम्, ऊपर से लेकर नीचे तक, सारे ब्रह्माण्ड का उसी एक रूपधातु दिव्य चित्-शक्ति से निर्माण हुआ है।

www.the-comforter.org

चित् अर्थात् चेतना का शक्ति या ऊर्जा रूप है अग्नि। ऋग्वेद में उसे 'हे ऊर्जासुत' (८.८४.४) कह कर संबोधन किया गया है। अग्नि है शक्ति-चैतन्य। जिस भी स्तर पर हम उसे पकड़ पायें, वह एक ऊष्मा है, ज्वाल है। जब हम अपने आपको अपने मानस में एकाग्र करते हैं तो मानसिक ऊर्जा का सूक्ष्म तेज अथवा मनोगत अग्नि प्रकट होती है। जब हम अपने हृदय या भावनाओं में समाहित होते हैं तब हमें प्राणिक ऊर्जा के सूक्ष्म तेज अथवा प्राणगत अग्नि का पता चलता है।

जब हम अपनी आत्मा के अंदर प्रवेश करते हैं तब हमें आत्मा के सूक्ष्म तेज का, चैत्य अग्नि का ज्ञान होता है। ऊपर से नीचे तक एक ही अनन्य अग्नि है, उसी एक परा चित्-शक्ति का, चैतन्य-ऊर्जा अथवा चैतन्य-तेज का प्रवाह है, जो विभिन्न स्तरों पर भिन्न-भिन्न तीव्रता धारण करता है। और फिर मूलभूत, द्रव्यभूत अग्नि है, जोकि चैतन्य-ऊर्जा की, उसके रूप-परिवर्तन या जड़तत्त्व में संहत होने से पूर्व की अंतिम अवस्था है। यहीं पहली से दूसरी अवस्था में संक्रमण होता है (श्री माँ की अनुभूति यहाँ स्मरण हो जाती है, 'वह चरम गति है और उस शक्ति अथवा तेज को अतिक्रांत किये है जो कोशाणुओं के संयोग से वैयक्तिक रूप-रचना के हेतु उन्हें संहत किया करती है।') आधुनिक विज्ञान ने भी अंततः यह देख ही लिया कि जड़तत्त्व और ऊर्जा तत्त्व को परस्पर एक दूसरे में बदला जा सकता है : $E = mc^2$ उसकी एक बड़ी महत्त्वपूर्ण खोज है, किन्तु वह अभी यह जान नहीं पाया कि यह ऊर्जा तत्त्व एक चेतना है, यह जड़तत्त्व एक चेतना है, और इसीलिए चेतना के संचालन द्वारा हम ऊर्जा तत्त्व अथवा जड़तत्त्व का संचालन कर सकते हैं।

क्रमशः अगले अंक में...

www.the-comforter.org

गुरुदेव सियाग सिद्धयोग ध्यान शिविर का आयोजन

01 मार्च से 07 मार्च 2021 तक अन्तर्राष्ट्रीय योग महोत्सव के अवसर पर ऋषिकेश में ध्यान शिविर का आयोजन किया गया।

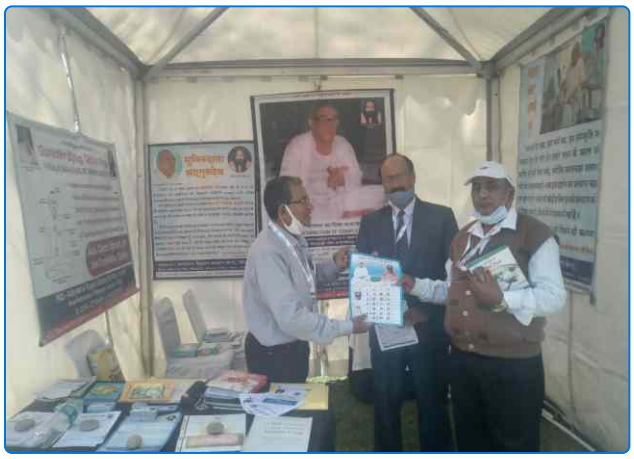

www.the-comforter.org

गुरुदेव सियाग सिद्धयोग ध्यान शिविर का आयोजन

अध्यात्म विज्ञान सत्संग केंद्र जोधपुर द्वारा आयोजित एक दिवसीय सिद्धयोग ध्यान शिविर का आयोजन बेंगलुरू, गांधीनगर स्थित वैष्णव समाज में 21 मार्च 2021 को हुआ। जिसमें बेंगलुरु के अलावा मैसुर, शिमोगा एवं अन्य जगहों से आये साधकों ने भाग लिया।

the-comforter.org

गुरुदेव सियाग सिद्धयोग ध्यान शिविर का आयोजन

26 मार्च 2021 को राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, महावीर नगर विस्तार योजना, कोटा और राजकीय माध्यमिक विद्यालय मीरा मार्केट टीचर्स कॉलोनी, केशवपुरा- कोटा में विद्यार्थियों एवं अध्यापकों के लिए ध्यान शिविर का आयोजन किया गया।

Youth is the Time to Gain Spiritual Knowledge.

-Gurudev Shri Ramlal Ji Siyag

The rules for doing work in human life have been decided according to his progressive development. Keeping in mind the physical and intellectual growth, the entire human life has been decided into four 'ashram' (stages) - Brahmcharya, Grahasth, Vaanprasth and Sanyaas. The rule has been set to gain physical and spiritual knowledge while following the rules and regulations of Brahmcharya (abstaining from external and sexual desires) in the first 25 years of life.

In the final two or three years of student life (Brahmcharya), full knowledge of Vedic and Yoga philosophy was given in a complete manner so that he is able to live a wholesome life in the next three stages of human life; means while living a physically, mentally and intellectually a healthy life, he is able to live a meaningful life. The next 25 years were decided to live the life of a 'Grahasth' (householder). And the following 25 years were decided to follow the rules of 'Vaanprasth'. In 'Vaanprasth, while leading the life of a householder one followed the rules of 'Brahmcharya' and used to guide his children by imparting the

www.the-comforter.org

complete knowledge that he had gained.

In this way, his children who were in 'Brhamcharya' or 'Grahsth' ashram, used to attain complete practical knowledge for leading a meaning life. After Vaanprashth stage, he would renounce the life of a householder completely and go to forest to live the life of a 'Sannyasi' (ascetic).

The above arrangement must have been in the 'Treta' and Dwapar' age when the ability of man and the worldly environment was totally conducive. In those ages, the 'tamsik' tendencies were not so prominent, so the man's character was very bright. But since the time of Kaliyug (Iron age) has started, the 'tamsik' tendencies have torn apart all the religions. Man has become completely willful. The dignity and decorum of life has been torn apart.

The Vedic and Yoga philosophy we talk about has mostly disappeared from life in a practical way. Today both of our above philosophies are just imprisoned in texts. Until this knowledge is freed and proven in the laboratory of human-body, it is impossible to lead a meaningful life. Because of the attributes of time, the yoga philosophy has almost disappeared.' Saankhya' Philosophy is progressing day by day. The 'tamsik' tendencies have full control over all of their achievements. That is why they are used by these tendencies for their own selfish motives. In such a situation, human peace is merely a pleasing dream.

Because of 'tamsik' tendencies, God has become a subject of imagination. The truth of life has

www.the-comforter.org

disappeared. It has become an acceptable principle that the time to attain spiritual knowledge is only old age. What kind of misconception has been spread as if spiritual knowledge is a hindrance in practical life. If that God is not practically meaningful in material life then what good is He in the old age? All the body parts become weak in the old age. One suffers from many kinds of diseases. The mind will be attentive only towards those problems, God cannot be remembered. So, youth is the right time to attain knowledge of all kinds.

The spiritual knowledge makes a man capable of living a completely meaning life. Our religion has fallen only because of the misconception that has spread in our religion.

When for the first time some polytechnic and medical students came to me, they asked me what kind of Science is Spiritual-Science and what is its meaning in human life? I said, "Where Physical Science ends, the Spiritual Science begins from there. Your Science is imprisoned in a test tube. The test tube of our Spiritual Science is the entire universe." They didn't like what I said.

They said sarcastically, "Our Science has reached up to moon and you people have reached the abyss and you say that an imaginary knowledge like Spiritual Science is higher."

I said, "Son, what you said is all right but where there is truth, there it is as I said." They got more agitated by this and pointing towards me by their hands said, "Have you set out to tell the truth?

www.the-comforter.org

What are the other 'mathadheesh' (abbots) doing?"

I knew it very well that I will have to hear such things. I said, "Son, whatever certificate you will give me, I will accept it happily but before that listen to me." They became quiet and ready to listen and understand me.

After explaining about the great Science of Kundalini, Yoga Philosophy and Shaktipat, I gave them some books related to it. They took the books to their hostel with them. Many of their friends also read them. After this about 25-26 students came to me and said, "We will not believe whatever is written in books unless and until we experience it."

I said no one will believe it. They started meditating according to the way I explained the method of meditation. The moment their minds quietened, they started getting some pleasure and the moment they were mentally ready the wave of 'Shaktipat' entered in them and everyone started experiencing Yogic Kriyas automatically.

After about half an hour, the yogic kriyas stopped. I asked them, "What kind of exercises you all started doing? Is my room a play ground?" The boys were perplexed. They said, "We didn't do anything. This happened against our will."

I said, "I was watching. You were doing it."

They said, "We were meditating by focussing on 'agyachakra' after closing our eyes according to your instructions, when suddenly these yogic kriyas were induced automatically from within. We tried

www.the-comforter.org

to open our eyes too, but we couldn't. We tried to stop it, but we couldn't." Then we thought that let it happen. They were occurring because of someone who was directing from within. We couldn't see who was giving the direction.

Then I said that this means that there is such a power within you that can make you dance according to its will. They accepted it. They said that there is no room left to argue on this. I said, "Then make a great friendship with the one within you, he will tell you a lot of things."

After this, they used to come everyday in the evening between 5 and 6 and meditate and mostly all of them used to experience different kinds of yogic movements. The moment Kundalini reached near 'agyachakra', pranayama started occurring on its own.

Then I said that you cannot attain 'samadhi' without taking the 'mantra deeksha'. One can reach up to 'agyachakra' even by 'Hath yoga' but to pierce 'agyachakra' in order to reach the world of 'Parbrahm' (Sat+Chit+Anand= Satchitanand), it is utmost necessary to chant an appropriate mantra along with meditation.

By then they were all mentally ready. They attained 'samadhi' only after a few days of taking initiation. Then one day I said to them, "Son, now you can give whatever certificate you want, I will accept it happily." They felt ashamed and said, "Guruji, whatever you may say but we were innocent." Is this knowledge being imparted in India's spiritual world?

www.the-comforter.org

So, it is my belief that when millions of youths of the world will do research on Physical Science after expanding their inner consciousness, innumerable problems of Physical Science will be resolved.

I give mass initiation. Not even a second is required by that Supreme Power to awaken the consciousness of millions of people. If one lakh people are sitting in front of me to take initiation then all the positive-minded people among them will be awakened at once irrespective of how large they are in number. World peace is impossible without mass Shaktipat initiation.

So, I lovingly invite all the positive-minded men and women of the world.

www.the-comforter.org

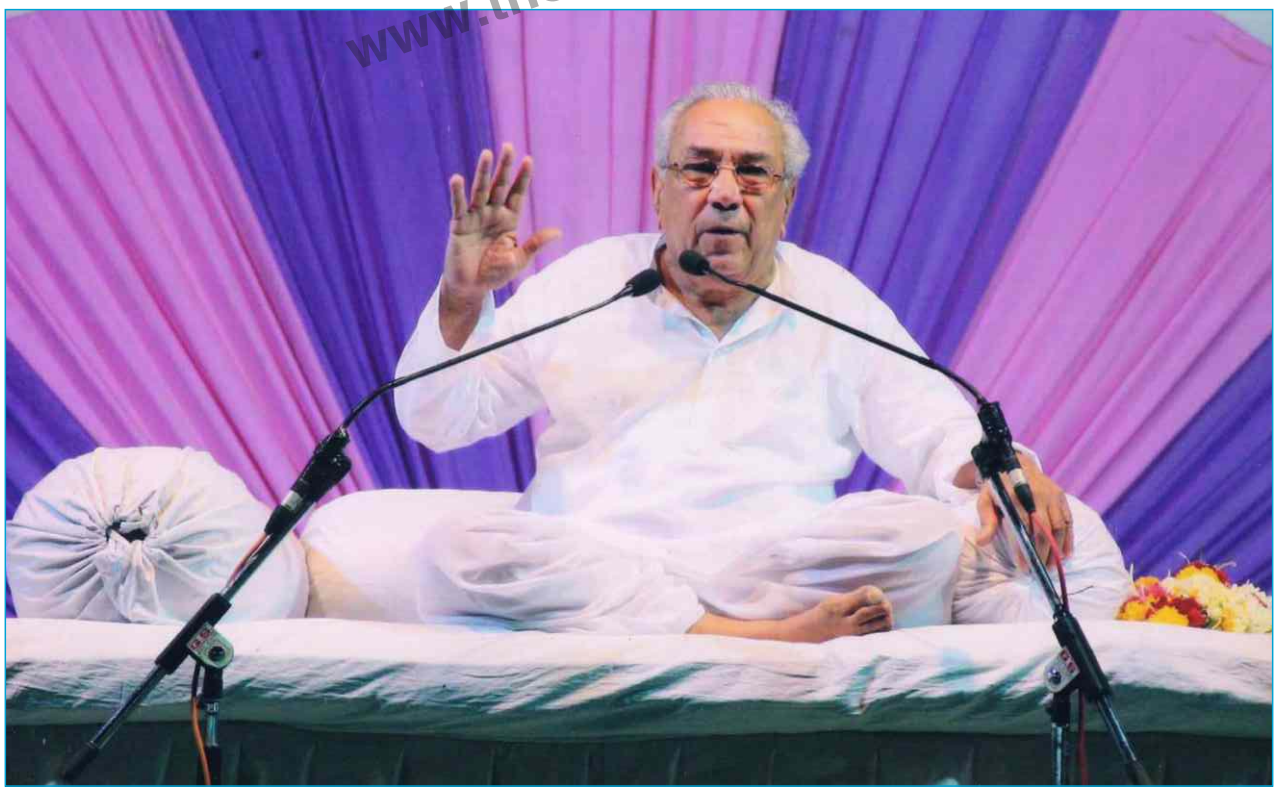

सद्गुरुदेव की दिव्य लेखनी से...

आहार की शुद्ध होने पर अन्तः करण की शुद्धि होती है।

"गुरुरेव जगत्सर्वं ब्रह्मविष्णुशिवात्मकम्।
गुरोः परतरं नास्ति तस्मात्संपूजयेद् गुरुम्॥ गुरुगीता: ८०

इस सम्बन्ध में भगवान ने गीता के ४ थे अध्याय के ३४ वें श्लोक में तत्त्वज्ञानी से ज्ञान का उपदेश प्राप्त करने की विधि बताते हुए कहा है-

तद्विद्धि प्रणिपातेन परिप्रश्नेन सेवया।
उपदेक्ष्यन्ति ते ज्ञानं ज्ञानिनस्तत्त्वदर्शिनः॥ ४:३४॥

"(तत्त्व को जानने वाले ज्ञानी पुरुषों से) भली प्रकार दण्डवत प्रणाम (तथा) सेवा (और) निष्कपट भाव से किए हुए प्रश्न द्वारा उस ज्ञान को जान ये मर्म को जानने वाले ज्ञानीजन ज्ञान का उपदेश करेंगे" ॥४:३४॥

भारत के नाथ सम्प्रदाय के संतों के नाम सदेश

भारत में शासक वर्ग ने जब तक संतों के आदेश के अनुसार शासन किया उस समय देश हर प्रकार से समृद्धिशाली रहा। ज्यों-ज्यों सत्ता पक्ष ने संतों के आदेश की अवहेलना करनी प्रारम्भ की उनकी गिरावट प्रारम्भ हो गई। इसी प्रकार दूसरा संतों का पक्ष भी असन्तुलित होकर नीचे की तरफ गिरने लगा। आज सत्ता पक्ष और संतों का पक्ष, दोनों अपनी-अपनी गिरावट की सीमा लाँघ चुके हैं।

संसार की इस अन्धकार पूर्ण स्थिति का उपचार गोरक्ष नाथ के अनुयाइयों के पास ही है। अब उन्हें संगठित होकर संसार के

www.the-comforter.org

सद्गुरुदेव की दिव्य लेखनी से...

गुरुवार १५ सितम्बर भादो सु ४ वि. २८ भादो स. २०४५

हानि क्या है अवसर से चूकना

अन्धकार को भगाना ही होगा। यह हमारा इतिहास बताता है कि अवतार मात्र इसी भूमि पर हुए हैं, बाकी सभी जगह पैगम्बर ही हुए हैं।

मुसलमान धर्म का मानना है कि मोहम्मद शाहेब आखिरी पैगम्बर थे। इसके साथ-साथ वे यीशु और मूसा को भी अपना पैगम्बर मानते हैं। इस प्रकार प्रकृति के नियम के अनुसार क्रमिक विकास के अनुसार अब आखिरी पैगम्बर के बाद अवतार का नम्बर है। और वर्तमान अवतार केवल भारत की भूमि पर ही हुए हैं, अतः इस भूमि पर वह सत्ता प्रकट होने वाली है।

जब तक भारत के साधु-संत दास-वृत्ति त्याग कर नाथवृत्ति धारण नहीं करेंगे देश का कल्याण असम्भव है। इस देश में हमेशा ऐसा ही होता आया है।

अतः मैं मेरे संत सद्गुरु देव भगवान श्रीगंगाईनाथ जी योगी के आदेश से देश के नाथ सम्प्रदाय के साधु-संतों को संदेश देता हूँ कि अपनी असलियत को पहचानो। तुम तो संसार के इन अनाथों के नाथ हो। नाथ ही अनाथों की रक्षा कर सकता है। अतः सम्पूर्ण विश्व का अन्धकार पूर्णरूप से खत्म होने तक आराम से मत बैठो। अब बैठने का समय नहीं है। अलख-चेतावनी-

www.the-comforter.org

गतांक से आगे...

कठिनाई में...

योग के आधार

-महर्षि श्री अरविन्द

श्रीमां की शक्ति के बीच किसी दूसरी चीज या व्यक्ति को मत आने दो। उस शक्ति को अपने अंदर आने देने और धारण करने तथा सत्य-प्रेरणा को स्वीकार करते रहने पर ही सफलता निर्भर करती है, न कि मन द्वारा रचित कुछ धारणाओं के ऊपर। यहां तक कि जो सब धारणाएँ या योजनाएँ दूसरे ढंग से संभवतः सफल भी हो जातीं, वे भी विफल हो जायेंगी, यदि उनके पीछे यह सत्य-भावना, सत्य-शक्ति और सत्य-प्रभाव न विद्यमान हो।

यह कठिनाई अवश्य ही अविश्वास और अवज्ञा के कारण आयी होगी क्योंकि अविश्वास और अवज्ञा ठीक मिथ्याचार की तरह हैं (वे स्वयं मिथ्यापन ही हैं और मिथ्या धारणाओं और प्रेरणाओं पर ही आश्रित होते हैं), वे महाशक्ति के कार्य में हस्तक्षेप करते हैं, साधक को उस शक्ति का अनुभव प्राप्त करने में या उस शक्ति को पूर्ण रूप से कार्य करने देने में बाधा डालते हैं तथा भागवत संरक्षण की शक्ति को क्षीण कर देते हैं।

केवल अपनी अंतर्मुखी एकाग्रता के समय ही नहीं, बल्कि अपने बाहरी कार्यों तथा विभिन्न प्रवृत्तियों में लगे रहने पर भी तुम्हें उचित भाव बनाये रखना होगा। यदि तुम ऐसा कर सको और सब बातों में श्रीमां का पथप्रदर्शन स्वीकार करो तो तुम देखोगे कि तुम्हारी कठिनाइयां धीरे-धीरे कम होती जा रही हैं अथवा तुम बड़ी आसानी से उन्हें पार करते जा रहे हो और सभी चीजें क्रमशः सुगम होती जा रही हैं। तुम्हें अपने सभी कर्मों और क्रियाओं में भी ठीक वही करना चाहिये जो तुम अपने ध्यान में करते हो। श्रीमां की ओर अपने-आपको उद्घाटित करो, अपने सभी कर्मों को

www.the-comforter.org

श्रीमां के पथ-प्रदर्शन पर छोड़ दो, शांति का, सहारा देनेवाली दिव्य शक्ति का तथा दिव्य संरक्षण का आवाहन करो और इसलिये कि ये सब अबाध गति से अपना कार्य कर सकें, उन सब मिथ्या प्रभावों का त्याग करो जो भ्रांत तथा असावधानी या अचेतनता से पूर्ण क्रियाओं को उत्पन्न कर उनके मार्ग में बाधक हो सकते हैं। इस नीति का अनुसरण करो और तुम्हारी समस्त सत्ता शांति के अंदर, शरणदात्री शक्ति और ज्योति के अंदर, एक अखंड शासन के अंदर एक हो जायेगी।

मैंने जब अंतरात्मा की ज्योति और भागवत पुकार के प्रति एकनिष्ठ बने रहने के लिये कहा था तब मैं भूतकाल की किसी बात या तुम्हारी किसी व्यक्तिगत त्रुटि की ओर संकेत नहीं कर रहा था। मैं केवल उस बात को ही प्रस्थापित कर रहा था जिसकी सब प्रकार के संकटों और आक्रमणों के समय बड़ी आवश्यकता होती है-अर्थात् किसी भी प्रकार के सुझावों, प्रेरणाओं तथा प्रलोभनों की बात की ओर कान देने से इंकार कर देना और उन सबके विरुद्ध सत्य के आह्वान और ज्योति के अलंघ्य निर्देश को प्रस्थापित करना।

सब प्रकार के संशय और अवसाद के समय यह कहना चाहिये कि मैं भगवान् का हूं, मैं कभी असफल नहीं हो सकता। अशुद्धि और अयोग्यता के सुझाव आने पर यह उत्तर देना चाहिये कि मैं अमृत का पुत्र हूं, भगवान् ने मुझे वरण किया है, मुझे तो बस अपने तथा उनके प्रति सच्चा बने रहना है-फिर विजय निश्चित है, और अगर मैं गिर भी जाऊं तो मैं फिर से उठ खड़ा होऊंगा; वापस लौट जाने और किसी तुच्छ आदर्श का अनुसरण करने की प्रेरणाएं आने पर यह उत्तर देना चाहिये कि यही तो सबसे श्रेष्ठ आदर्श है, केवल यही तो वह सत्य है जो मेरे अंतरस्थ अंतरात्मा को संतुष्ट कर सकता है, मैं सभी परीक्षाओं और दुर्गतियों को पार करता हुआ इस दिव्य यात्रा के एकदम अंत तक डटा रहूंगा। ज्योति और भागवत पुकार के प्रति एकनिष्ठ बने रहने का मतलब मेरी दृष्टि में यही है।

क्रमशः अगले अंक में...

www.the-comforter.org

सिद्धयोग :- शक्तिपात दीक्षा द्वारा कुण्डलिनी जागरण

www.the-comforter.org

भारतीय ऋषियों ने सृष्टि की उत्पत्ति के संबंध में अंतर्मुखी होकर खोज की तो पाया कि संपूर्ण ब्रह्माण्ड, मनुष्य के शरीर में है। जब हमारे ऋषियों ने और गहन शोध किया तो पाया कि इस जगत् को रचने वाला सहस्रार में स्थित है और उसकी शक्ति मूलाधार में। इन दोनों के कारण ही संसार की रचना हुई है।

उस परम पुरुष की शक्ति, उसके आदेश से नीचे उतरती गई और अलग-अलग बंध लगाकर सभी लोकों की रचना करके मूलाधार में स्थित हो गई। इसके चेतन होकर उर्ध्वगमन करते हुए सहस्रार में पहुँचने का नाम ही 'मोक्ष' है। मोक्ष की प्राप्ति जीते जी होती है। मरने के बाद मोक्ष की कल्पना करना, एक मृगमरीचिका ही है और कुछ नहीं।

गुरु-शिष्य परंपरा में जो शक्तिपात दीक्षा का विधान है, उसके अनुसार गुरु अपनी शक्ति से कुण्डलिनी को चेतन करके

ऊपर को चलाते हैं। गुरु का शक्ति पर पूर्ण प्रभुत्व होता है, इसलिए वह उस गुरु के आदेश के अनुसार चलती है। क्योंकि यह सहस्रार में स्थित परमसत्ता की पराशक्ति है अतः यह मात्र उसी का ही आदेश मानती है। इसका स्पष्ट अर्थ है कि जिस व्यक्ति को सहस्रार में स्थित उस परम तत्त्व की सिद्धि हो जाती है, वही इसका संचालन करने का अधिकारी है। यह शक्ति विश्व में, एक समय में, मात्र एक ही व्यक्ति के माध्यम से कार्य करती है। क्योंकि यह सार्वभौम सत्ता है, इसलिए वह व्यक्ति विश्वभर में अभूतपूर्व क्रांतिकारी परिवर्तन करने की सामर्थ्य रखता है।

यह भारतीय दर्शन की विश्व को अभूतपूर्व एवं अद्वितीय देन है। अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर के संस्थापक व संरक्षक, प्रवृत्तिमार्गी परम श्रद्धेय समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलालजी सियाग अपने सद्गुरुदेव बाबा श्री गंगाईनाथजी योगी ब्रह्मलीन (जामसर) के आदेशानुसार इस दिव्य ज्ञान का महाप्रसाद बाँटने, विश्व में अकेले ही निकल पड़े हैं।

शक्ति पात से जब कुण्डलिनी शक्ति जाग्रत हो जाती है तो उर्ध्वगमन करने लगती है। कई जन्मों के संस्कारों के कारण रास्ता अवरूद्ध रहता है। अतः साधक को विभिन्न प्रकार की यौगिक क्रियाएँ जैसेः- आसन, बंध, मुद्राएँ एवं प्राणायाम स्वतः ही होने लगते हैं। वह शक्ति साधक का शरीर, प्राण, मन और बुद्धि अपने अधीन कर लेती है। इस प्रकार जो क्रियाएँ होती हैं उन्हें साधक न तो स्वयं करने की स्थिति में होता है और न ही रोकने की। वह शक्ति सीधा अपने नियंत्रण में सभी क्रियाएँ स्वयं करवाती है।

गुरुदेव के अनुसार भौतिक विज्ञान के शोधकर्त्ताओं की असंख्य समस्याओं का समाधान, इस ज्ञान से हो जाएगा। समाधि स्थिति में वह परमसत्ता हर समस्या का समाधान शोधकर्ताओं को करवा देगी। इस प्रकार मनुष्य जाति की असंख्य समस्याओं का समाधान हो जाएगा।

गुरु-शिष्य परंपरा में जिस सिद्धयोग अर्थात् महायोग का वर्णन है, उसके आदि गुरु कैलाशवासी भगवान्

www.the-comforter.org

परशिव हैं। शिव से यह ज्ञान अमर कथा द्वारा महायोगी श्री मत्स्येन्द्र नाथ जी को मिला। उनके परम शिष्य महायोगी श्री गोरखनाथजी ने इस सिद्धयोग से संसार का जो कल्याण किया है, वह सर्वविदित है। यह योग संसार के त्रिविध तापों- आधि दैहिक, आधि भौतिक व आधि दैविक (Physical, Mental & Spiritual) का शमन (नाश) करता है। इसलिए संसार की कोई भी असाध्य बीमारी व विज्ञान सम्बधित समस्या नहीं है; जिसका सिद्धयोग में समाधान न हो। अर्थात् सिद्धयोग में सब कुछ संभव है, जो सदगुरुदेव श्री रामलालजी सियाग की शक्तिपात दीक्षा से मानवता में मूर्तरूप ले रहा है।

सिद्धयोग से लाभ-

समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग से मंत्र दीक्षा प्राप्त करने के बाद, उनके चित्र का नियमित ध्यान एवं नाम जप द्वारा मातृशक्ति कुण्डलिनी के जागरण से साधक में निम्न परिवर्तन आ जाते हैं-

. सभी प्रकार के असाध्य रोगों जैसेः-एड्स, कैंसर, डायबिटीज, टी. बी, दमा, ब्लड प्रेशर, मिर्गी, बवासीर, हीमोफीलिया, हेपेटाइटिस व गठिया आदि से पूर्ण मुक्ति संभव।

. सभी प्रकार के मानसिक रोगों जैसेः-तनाव, पागलपन, उन्माद, भय, चिंता, अनिद्रा आदि से पूर्ण मुक्ति संभव।

. सभी प्रकार के नशों जैसेः- शराब, अफीम, हेरोइन, भांग, तम्बाकू (बीड़ी, सिगरेट व जर्दा) आदि से बिना किसी परेशानी के छुटकारा।

. विद्यार्थियों की एकाग्रता एवं याद्दाश्त में नाम जप व ध्यान द्वारा अभूतपूर्व वृद्धि।

. आध्यात्मिकता के पूर्ण ज्ञान के साथ भूत, वर्तमान एवं भविष्य की घटनाओं को ध्यान के समय प्रत्यक्ष देखना और सुनना।

. गृहस्थ जीवन में रहते हुए 'भोग एवं मोक्ष' दोनों तत्त्वों की सहज प्राप्ति। इसके साथ ही जीवन की समस्त सांसारिक परेशानियों से छुटकारा।

. ईश्वर की प्रत्यक्षानुभूति एवं साक्षात्कार संभव।

www.the-comforter.org

क्या एक निर्जीव चित्र, सजीव (मानव) पर प्रभाव डाल सकता है ?

सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग

प्रत्यक्ष को प्रमाण क्या ? ध्यान करके देखें।

शक्तिपात-दीक्षा

गुरुदेव सियाग सिद्धयोग आराधना की एक सरल विधि है। इसमें साधक को सघन मंत्र जाप व ध्यान करना होता है।

समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामालाल जी सियाग एक सिद्धगुरु हैं जो शक्तिपात दीक्षा से, अपनी दिव्य शक्ति को संजीवनी मंत्र द्वारा शिष्य में संप्रेषित कर, उसकी सुप्तुप्त शक्ति, कुण्डलिनी को जाग्रत कर देते हैं।

गुरुदेव सियाग का संजीवनी मंत्र, एक चेतन (Enlightened) मंत्र है, इसमें प्राण प्रतिष्ठा की हुई है। इस मंत्र में असंख्य ऋषियों की कमाई है।

गुरुदेव की दिव्य वाणी में संजीवनी मंत्र सुनने के लिए डायल करें - 07533006009

(सभी जाति एवं धर्मों के जिज्ञासु स्त्री-पुरुषों को सस्नेह निमंत्रण)

www.the-comforter.org

ध्यान की विधि

- आरामदायक स्थिति में बैठकर थोड़ी देर के लिए गुरुदेव के चित्र को एकाग्रता से, खुली आँखों से देखें।
- फिर गुरुदेव से 15 मिनट के लिए ध्यान स्थिर करने की करूण प्रार्थना करें।
- अब आँखें बंद करके समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग के चित्र को अपने आज्ञाचक्र पर (जहाँ बिन्दी या तिलक लगाते हैं) केन्द्रित करते हुए, संजीवनी मंत्र का मानसिक जाप (बिना होंठ-जीभ हिलाए) करते रहें।
- इस दौरान कोई भी यौगिक क्रिया (आसन, बंध, मुद्रा या प्राणायाम) हो तो घबराएँ नहीं तथा न ही इन्हें रोकने का प्रयास करें। ध्यान की अवधि पूर्ण होते ही सामान्य स्थिति हो जाएगी।
- इस विधि से सुबह-शाम खाली पेट नियमित रूप से (केवल 15 मिनट) ध्यान करते रहें।
- नाम जप ही ध्यान की चाबी है। इसको तेल की धार की तरह, हर समय जपें।

Method of Meditation

- Sit in a comfortable position and look at Gurudev's image for a while.
- Then pray to Gurudev to help you meditate for 15 minutes.
- Now close your eyes and while focussing on Gurudev's image at the centre of your forehead, mentally chant (without moving your lips and tongue) the Sanjeevani Mantra given by Gurudev.
- During this time if you undergo automatic yogic movements, then let them happen. Don't try to stop them. After requested time is over, they will stop.
- Meditate in this way for 15 minutes, in the morning and evening, on an empty stomach.
- For profound meditation, chant the mantra as much as possible while performing your daily activities.

मुख्यालयः- अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर

होटल लेरिया के पास, चौपासनी, जोधपुर (राज.) 342001 सम्पर्क : +91-2912753699, +91-9784742595

Email: avsk@the-comforter.org, Website: www.the-comforter.org

R.N.I. NO. : RAJMUL/2008/26365*POSTAL REGD. NO. JODHPUR/269/01.01.2020 & VALID UP TO 31.12.2022
DATE OF ISSUE : EVERY MONTH 27 & DISPATCH 28-29

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः ।
गुरु साक्षात परब्रह्म, तस्मै श्री गुरुवे नमः ।।

—— अवितरित प्रति निम्न पते पर लौटायें ——
Spiritual Science . स्पिरिचुअल साइंस
अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर
होटल लेरिया के पास, चौपासनी पोस्ट बॉक्स नं. 41, जोधपुर (राज.) 342001
फोन: + 91 291 2753699, मो. : +91 9784742595 वेबसाइट: www.the-comforter.org

मुद्रित सामग्री (Printed Matter)

सेवा में,

श्रीमान्_____

स्वत्वाधिकारी: अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर के लिए प्रकाशक व मुद्रक राजेन्द्र कुमार चौधरी के लिए, अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, होटल लेरिया के पास, चौपासनी, जोधपुर (राजस्थान) से प्रकाशित।